ज्ञान गरिमा युत् धीमानो,
जैन शासन जयवंत वर्ते!

परमपूज्य भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित श्री कुन्दकुन्दादि दिगम्बर आचार्य व विद्वानों द्वारा लिखित आध्यात्मिक शास्त्रों के रहस्य का उद्घाटन 20वीं शताब्दी में आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने किया, जिससे शुद्धात्मतत्त्व पोषक आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ।

क्रियाकाण्ड एवं बाह्य आडम्बर से मुक्त एवं निश्चय-व्यवहार की संधियुक्त अणु-अणु की स्वतंत्रता एवं शुद्धात्मा के स्वरूप का रहस्योद्घाटन पूज्य गुरुदेवश्री ने अपने मुखारविन्द से लगभग 45 वर्षों तक किया। उनके द्वारा उद्घाटित तत्त्व का प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण देश में ही नहीं, अपितु पाश्चात्य देशों में भी हो रहा है।

उक्त तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु देश में उनकी उपस्थिति व अनुपस्थिति में भी उनके प्रभावना योग से अनेक आध्यात्मिक केन्द्रों की स्थापना हुई।

इसी क्रम में राजस्थान के दक्षिण में मध्यप्रदेश एवं गुजरात की सीमा पर स्थित बांसवाड़ा नगर में श्री धूलजीभाई ज्ञायक परिवार व उनके सुपुत्र श्री महीपालजी एवं श्री धनपालजी की भावना व सहयोग से श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा ''रत्नत्रयतीर्थ ध्रुवधाम'' की डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री एवं वसन्तभाई एम. दोशी तथा देश के अन्य प्रमुख विद्वानों की सहमति पूर्वक सन् 2004 में स्थापना हुई।

उद्देश्य

ट्रस्ट का पावन उद्देश्य जिनेन्द्र कथित व गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा उद्घाटित मूल तत्त्वज्ञान के साथ-साथ सदाचार, श्रावकाचार के प्रचार-प्रसार हेतु महाविद्यालय संचालन, शिविरों का आयोजन, साहित्य प्रकाशन, लेखन व लेखकों/प्रचारकों को प्रोत्साहित करना है।

रत्नत्रयतीर्थ ध्रुवधाम में निर्मित आयतन

श्री पंच बालयति जिनमंदिर

देव-शास्त्र-गुरु की आराधना हेतु ध्रुवधाम में श्री पंचबालयति जिनमंदिर की भव्य रचना की गई है। जिसमें 51 इंच श्वेत धवल पाषाण की श्री महावीरस्वामी एवं 41 इंच की श्री वासुपूज्य व भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमाजी सहित पंच बालयति की प्रतिमाजी 6 दिसम्बर, 2006 को विराजमान की गई।

श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन एवं श्री सीमन्धर समवशरण मंदिर

भवभयहारी, आत्महितकारी, जिनवाणी के स्वाध्याय हेतु भूतल पर श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन निर्मित हुआ है। इसी भवन में जीवंतस्वामी श्री सीमन्धर भगवान का मनहर समवशरण एवं 61 इंच खड्गासन श्री आदिनाथ व श्री शांतिनाथ भगवान के वीतराग भाववाही जिनबिम्ब भी स्थापित किये गये हैं।

जिन दर्शन कर निज दर्शन पा

मानस्तम्भ

देखत मान गले मानी का
मानस्तम्भ सार्थक नाम।

उक्ति को चरितार्थ
करता हुआ
63 फुट उन्नत
श्री भगवान महावीरस्वामी का
भव्य मानस्तम्भ
जिनमंदिर के समक्ष शोभायमान
हो रहा है।

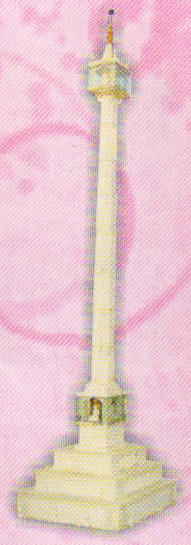

आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महविद्यालय

युवावर्ग में धार्मिक/आध्यात्मिक संस्कार देकर उन्हें आत्मार्थी विद्वान के रूप में तैयार करने हेतु सन् 2004 में आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय स्थापित किया गया है। महाविद्यालय में कक्षा 10वीं उत्तीर्ण छात्रों को पांच वर्षीय पाठ्यक्रम के अध्ययन हेतु प्रवेश दिया जाता है। पांच वर्ष बाद छात्रों को संस्कृत विश्व विद्यालय से शास्त्री (बी.ए. के समकक्ष) की उपाधि दी जाती है। छात्रों को यहाँ सभी सुविधाएँ ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क दी जाती हैं।

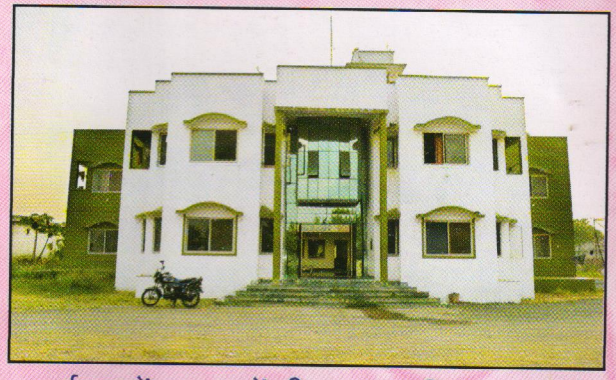

वर्तमान में 50 छात्रों की आवास सुविधा उपलब्ध है। छात्रों की सुविधा हेतु छात्रावास में राजा श्रेयांस भोजनालय, ब्राह्मी सुन्दरी पुस्तकालय, पं. बनारसीदास सभाकक्ष का भी निर्माण किया गया है।

सभी छात्र प्रतिदिन देव-शास्त्र-गुरु का प्रातः सामूहिक अभिषेक, पूजन एवं सांय सामूहिक भक्ति करते हैं और चारों अनुयोगों के शास्त्रों का अध्ययन कर प्रवचन, सभा संचालन व विधि-विधान कराने में भी प्रशिक्षित होते हैं।

उपलब्धियाँ

सन् 2004 से सन् 2012 तक 9 सत्रों में राजस्थान के 28, मध्यप्रदेश के 22, उत्तरप्रदेश के 9, महाराष्ट्र के 20 एवं कर्नाटक के 2 कुल 81 छात्रों ने महाविद्यालय में प्रवेश लिया। जिनमें से अभी तक 33 छात्र शास्त्री कक्षा तक अध्ययन कर चुके हैं और अपनी योग्यता/ आवश्यकतानुसार उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं या किसी सेवा में संलग्न हैं, साथ ही धर्म प्रचार के कार्य में भी यथासंभव सहयोग कर रहे हैं।,ज्ञातव्य है कि यहाँ अध्ययनार्थ अधिकतर छात्र द्वितीय या तृतीय श्रेणी उत्तीर्ण ही आते हैं, परन्तु यहाँ से जाने वाले सभी छात्र प्रथम या द्वितीय श्रेणी उत्तीर्ण होकर ही जाते हैं। प्रतिवर्ष 'ध्रुवधाम' के विद्यार्थी बोर्ड व विश्वविद्यालय के परीक्षा परिणाम में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं, जिसमें 'ध्रुवधाम' के समस्त अध्यापक वर्ग का विशेष सहयोग प्राप्त होता है।

निजधाम

ध्रुवधाम में समय-समय पर पधारने वाले साधर्मियों की आवास व्यवस्था हेतु सर्व सुविधा युक्त 12 कक्षों व 2 हॉल का निर्माण भी हो चुका है।

ध्रुवधाम मासिक पत्रिका

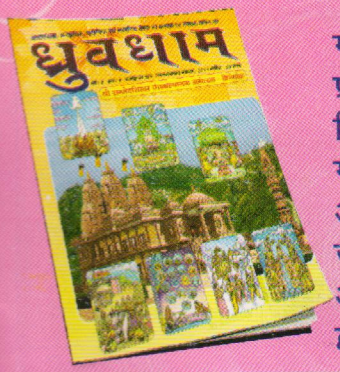

सन् 2005 से ध्रुवधाम मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है। पत्रिका में प्रकाशित सम्पादकीय, अध्यात्मजगत, बाल–युवा जगत, महिला जगत आदि स्थाई स्तम्भ सभी द्वारा सराहे जा रहे हैं।

साहित्य प्रकाशन व साहित्य विक्रय हेतु

अप्रकाशित/अनुपलब्ध साहित्य के प्रकाशन की योजना भी ट्रस्ट की है, जिसमें अभी तक सामायिक संजीवनी (पाठ संग्रह) के 2 संस्करण प्रकाशित किये जा चुके हैं। भविष्य में अन्य भी सत्साहित्य प्रकाशन कर, तत्व–प्रचार प्रसार में सहयोगी बनने का प्रयास किया जायेगा।

वीतरागता पोषक, सत्साहित्य यहाँ आने वाले दर्शनार्थियों को सहजता से उपलब्ध हो सके एतदर्थ, देश के प्रमुख साहित्य प्रकाशनों का साहित्य यहाँ हमेशा उपलब्ध रहता है एवं विक्रेता रहित साहित्य विक्रय केन्द्र संचालित किया जा रहा है, साथ ही प्रमुख महोत्सव में साहित्य विक्रय केन्द्र संचालित कर, प्रचार–प्रसार में योगदान दिया जा रहा है।

औषधालय

आत्मिक/मानसिक शान्ति के साथ–साथ शारीरिक व्याधियों के निवारण हेतु बांसवाड़ा शहर में ज्ञायक हॉस्पिटल का संचालन किया जा रहा है एवं भविष्य में ध्रुवधाम में भी पारमार्थिक औषधालय संचालित करना प्रस्तावित है।

ध्रुवधाम में आकन सदा ध्रुवधाम तुम ध्याओ।
जिनवाणी का अध्ययन मनन कन ध्रुवधाम को पाओ।
ध्रुवधाम को पाकन सदा उसमें ठी रम जाओ।
ध्रुवधाम में रम कन सदा तुम ध्रुव ठी कहलाओ।

महाविद्यालय की दैनिक गतिविधियाँ

प्रवचन सुनते हुए छात्र।

प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्र।

व्यायाम करते हुए छात्र।

दुग्धपान करते हुए छात्र।

ज्ञान दान के इस महायज्ञ में निम्नानुसार राशि प्रदान कर आप भी ट्रस्ट का सहयोग कर सकते हैं।

सहयोग हेतु योजनायें

ध्रुवधाम के परम शिरोमणि संरक्षक	5 लाख
शिरोमणि संरक्षक	3 लाख
परम संरक्षक	2 लाख
संरक्षक	1 लाख

सभी सहयोगियों के नाम उचित स्थान पर अंकित कराये जायेंगे

महाविद्यालय हेतु सहयोग

एक विद्यार्थी का पांच वर्ष का व्यय	1.25 लाख
एक विद्यार्थी का एक वर्ष का व्यय	25 हजार
भोजनालय ध्रुव फण्ड (दातार का फोटो लगेगा)	11 हजार
ध्रुवधाम का एक दिन का व्यय	3100/-
छात्रों के एक दिन का भोजन व्यय	2100/-
पूजन तिथि	500/-

आशा है आप सभी अन्य केन्द्रों की भांति इस केन्द्र को भी अपनापन प्रदान करेंगे और आपका अपनापन पाकर यह केन्द्र तत्वप्रचार–प्रसार व आत्म साधना में सहभागी बन सकेगा।

आप अपनी सहयोग राशि श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट के नाम से एच.डी.एफ.सी. बैंक के खाता सं. 07791450000014 या बैंक ऑफ बड़ौदा के खाता सं. 15880100002051 में जमा करा सकते हैं।

महाविद्यालय के अनन्य सहयोगी

- ज्ञायक परिवार, बांसवाड़ा
- श्री अनन्त भाई ए. सेठ, मुम्बई
- श्री अशोककुमार राजमल पाटनी परिवार कोलकाता
- श्री अजित जैन, बड़ौदा
- भारती बेन आर. कोठारी, मुम्बई
- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, कोलकाता

आप सभी सपरिवार ध्रुवधाम अवश्य पधारें आपका स्वागत कर हम गौरवान्वित होंगे।

Printed by : Jain Computers # 9414177816

पंचबालयति जिनमंदिर है, कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन।
समवशरण है सीमंधर का, मानस्तंभ वीर भगवन।
है शिक्षण संस्थान मनोरम, और सुशोभित है निजधाम।
निज ज्ञायक की महिमा लाने, आप पधारो 'निज ध्रुवधाम'।

श्री ज्ञायक परमार्थिक ट्रस्ट बांसवाड़ा द्वारा संस्थापित

रत्नत्रय तीर्थ

ध्रुवधाम

विहंगावलोकन

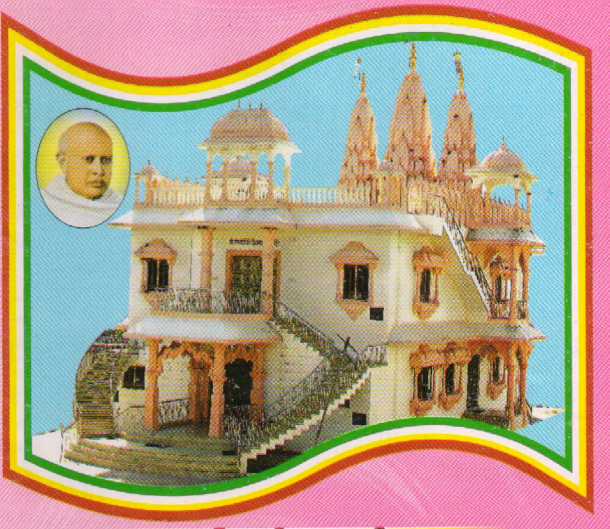

पदाधिकारी एवं ट्रस्टीगण

अध्यक्ष
महीपाल ज्ञायक
09414103475

उपाध्यक्ष
वसन्त भाई एम. दोसी
09820248383

महामंत्री
धनपाल ज्ञायक
09414101432

कोषाध्यक्ष
कन्हैयालाल दलावत
09828143907

अनन्त भाई ए. सेठ (मुम्बई)
विनयचन्द लुहाड़िया (मुम्बई)
आलोककुमार जैन (कानपुर)
वीरेन्द्र ज्ञायक (बांसवाड़ा)

कार्यालय

रत्नत्रय तीर्थ ध्रुवधाम
डूंगरपुर रोड़, ग्राम कूपड़ा, बांसवाड़ा (राज.) 327001
मो. 09414103475, 09672972902